

मनोविज्ञान के विभिन्न शब्द तथा उनकी उत्पत्ति

शब्द	उत्पत्ति	भाषा	अर्थ
1. साइकोलॉजी	साइको + लोगस (आत्मा)+(विज्ञान)	ग्रीक	आत्मा का विज्ञान
2. एजुकेशन	एडुकेयर	लेटिन	उठाना, शिक्षित करना
3. शिक्षा	शिक्ष् धातु	संस्कृत	
4. एडोलेसेंस (किशोरावस्था)	एडोलेशियरे	लेटिन	वृद्धि
5. पर्सनालिटी (व्यक्तित्व)	पर्सोना	लेटिन	नाटकीय पोशाक/मुखोटा
6. हैबिट (आदत)	हैबिट्स	लेटिन	किसी चीज को प्राप्त करना
7. इन्टरेस्ट (रुचि)	Interesse	लेटिन	यह सम्बन्धित है या अन्तर करना
8. मोटिवेशन (अभिप्रेरणा)	मोटम	लेटिन	टू मूव और मोशन

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के पूरे नाम

क्र.सं.	संक्षिप्त नाम	पूरा नाम	देश
1.	इ.बी.टिचेनर	एडवर्ड ब्राडफोर्ड टिचेनर	इंग्लैण्ड
2.	जी.एस.हॉल	ग्रानविल्ले स्टेनले हॉल	यू.एस.ए.
3.	जे.बी.वाटसन	जॉन ब्रॉड्स वाटसन	यू.एस.ए.
4.	बी.एफ स्किनर	बरहस फ्रेडरीक स्किनर	यू.एस.ए.
5.	बंडुरा	एल्बर्ट बंडुरा	कनाडा
6.	ई.एल.थॉर्नडाइक	एडवर्ड ली थॉर्नडाइक	यू.एस.ए.
7.	आई.पी.पावलव	इवान पैट्रॉविक पावलव	रूस
8.	जे.एल.मोरेनो	जैकब लेवी मोरेनो	रोमानिया (जन्म), निवास (यूएस)
9.	फ्रोबेल	फ्रेडरिक विलियम ऑगस्ट फ्रोबेल	जर्मनी

बाल विकास के महत्वपूर्ण कथन

शैशवावस्था - (जन्म से 5 वर्ष की उम्र)

स्ट्रैंग - "जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है।"

ब्रिजेस - "दो वर्ष की उम्र तक बालक में लगभग सभी संवेगों का विकास हो जाता है।"

जे. न्यूमेन - "पांच वर्ष तक की अवस्था शरीर व मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील रहती है।"

वैलेन्टाईन - "शैशवावस्था सीखने का आदर्शकाल है।"

क्रो एण्ड क्रो - "बीसवीं शताब्दी बालकों की शताब्दी है।"

रॉस - "शिशु कल्पना का नायक है, अतः उसका भली प्रकार निर्देशन अपेक्षित है।"

एडलर - "शिशु के जन्म के कुछ समय बाद ही यह निश्चित किया जा सकता है कि भविष्य में उसका स्थान क्या है।"

गैसल - "बालक प्रथम छः वर्ष में बाद के 12 वर्ष से भी दुगुना सीख जाता है।"

सिगमण्ड फ्रायड के अनुसार - "शिशु में काम प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है पर वयस्कों की भांति उसकी अभिव्यक्ति नहीं होती है।"

वाटसन के अनुसार - "शैशवावस्था में सीखने की सीमा व तीव्रता विकास की अन्य अवस्था से बहुत अधिक होती है।"

रूसो के अनुसार - "बालक के हाथ, पैर व नैत्र उसके प्रारंभिक शिक्षक हैं। इन्हीं के द्वारा वह पांच वर्ष में ही पहचान सकता है, सोच सकता है और याद कर सकता है।"

बाल्यावस्था (6-12) -

कोल एवं ब्रुस ने - "बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल कहा है।"

रॉस - "बाल्यावस्था को मिथ्या या छद्म परिपक्वता का काल कहा है।"

ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन के अनुसार - "शैक्षिक दृष्टिकोण से बाल्यावस्था से अधिक जीवन में कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है।"

स्ट्रैंग के अनुसार - "बालक अपने को अति विशाल संसार में पाता है व उसके बारे में जल्दी से जल्दी जानकारी प्राप्त करना चाहता है।"

सिगमंड फ्रायड ने - "बाल्यावस्था को काम की प्रसुतावस्था 'कहा है।"

बर्ट के अनुसार - "बाल्यावस्था भ्रमण व साहसिक कार्य की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है।"

स्ट्रैंग - "ऐसा शायद ही कोई खेल हो जिसे दस वर्ष के बालक न खेलते हों।"

किल्पैट्रिक महोदय ने - "बाल्यावस्था को प्रतिद्वंद्वतात्मक समाजीकरण का काल" कहा है।

किशोरावस्था (13-18) -

स्टेनली हॉल के अनुसार - "किशोरावस्था प्रबल दबाव, तनाव, तूफान व संघर्ष का काल है।"

ई.ए. किल्पैट्रिक ने - "किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल कहा है।"

रॉस के अनुसार - "किशोरावस्था, शैशवावस्था की पुनरावृत्ति है।"

वैलेन्टीन के अनुसार - "घनिष्ठ व व्यक्तिगत मित्रता उत्तर किशोरावस्था की विशेषता है।"

वैलेन्टीन - "किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है।"

रिक्नर के अनुसार - "किशोर को निर्णय का कोई अनुभव नहीं होता है।"

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय एवं शिक्षा में उनका योगदान

क्र.	सम्प्रदाय	प्रवर्तक	विशेष
1.	संरचनावादी सम्प्रदाय (Structuralistic School)	विलियम वुण्ट (जर्मन) ई. बी. टिचनर (इंग्लैंड)	☆ इस सिद्धान्त के अनुसार मानसिक तत्वों का मनुष्य की चेतना में महत्वपूर्ण स्थान है। ☆ यह सम्प्रदाय वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग पर बल देता है।
2.	कार्यात्मवादी सम्प्रदाय (Functionalistic School)	जॉन डिवी, विलियम जेम्स एवं एंजिल (अमेरिका)	☆ यह सम्प्रदाय पाठ्यक्रम की विषय वस्तु की उपयोगिता पर बल देता है। ☆ बाल मनोविज्ञान, व्यक्तिक विभिन्नता बुद्धि परीक्षण आदि उपगमों को सर्वप्रथम प्रस्तुत करने का श्रेय इस सम्प्रदाय को जाता है।
3.	गेस्टाल्टवादी या समग्रकृति या अवयववाद सम्प्रदाय (Gestalt School)	मैक्स वर्दीमर, कोफ्का एवं कोहलर (जर्मनी) (RPSC II G. जू 2010)	☆ इस सम्प्रदाय के अनुसार कोई व्यक्ति किसी वस्तु को उसके समग्र रूप में देखता अथवा ग्रहण करता है। ☆ 'पूर्ण से अंश की ओर' शिक्षण पद्धति इसी सम्प्रदाय की देन है।
4.	मनोविश्लेषणवादी सम्प्रदाय	सिगमण्ड फ्रायड (ऑस्ट्रिया)	☆ इस सम्प्रदाय ने व्यवहार की संकल्पना में अचेतन एवं पूर्ण चेतन व्यवहार को सम्मिलित किया है। ☆ इस सम्प्रदाय में व्यवहार निर्धारण तथा व्यक्तित्व में यौन कारक को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है। ☆ इस सम्प्रदाय ने बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया है।
5.	साहचर्यवादी सम्प्रदाय	जॉन लॉक (इंग्लैंड)	☆ इस विचारधारा में स्पंदन तथा स्मृतिज्ञात साहचर्य को महत्व दिया है।
6.	प्रेरकीय (प्रयोजनवादी) सम्प्रदाय	विलियम मैक्डूगल (इंग्लैंड)	☆ आत्म सम्मान को विशेष महत्व देने वाले इस सम्प्रदाय के अनुसार सभी कार्यों के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य या प्रयोजन अवश्य होता है।
7.	व्यवहारवादी सम्प्रदाय	जॉन ब्राड्स वाटसन (अमेरिका)	☆ ये विचारधारा रूसी मनोविज्ञानी ई. पॉवलोव के परीक्षणों के परिणामों पर आधारित है। ☆ इस विचारधारा के अनुसार मनोविज्ञान का उद्देश्य मानव व्यवहार की व्याख्या, नियंत्रण एवं उसके संबंध में भविष्यवाणी करना है।

शिक्षा मनोविज्ञान अध्ययन विधियाँ

क्र.सं.	विधियाँ	प्रवर्तक	विशेष
1.	अन्तःदर्शन विधि (Introspective method)	विलियम वुण्ट तथा शिष्य टिचनर (जर्मनी)	☆ शाब्दिक अर्थ- अन्दर देखना या अन्दर की क्रियाओं को देखना। ☆ अन्तःकरण (मन) का निरीक्षण एवं विश्लेषण कर विचारों, भावनाओं एवं कल्पनाओं का निरीक्षण एवं विश्लेषण करता है। ☆ मनोविज्ञान की सबसे प्राचीनतम विधि है। ☆ इस विधि को आत्म निरीक्षण विधि भी कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति स्वयं अपनी मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।
2.	बहिर्दर्शन विधि (Extrospection method)	जे. बी. वाटसन (व्यवहारवाद का जनक)	☆ अवलोकन या निरीक्षण विधि के नाम से जानी जाने वाली इस बहिर्दर्शन विधि में दूसरे लोगों (अमेरिका) के व्यवहारों का अवलोकन किया जाता है।
3.	जीवन वृत्त विधि (Case History Method)	टाइडमैन (जर्मनी)	☆ इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग चिकित्सा के क्षेत्र में किया जाता है। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में इस विधि का अधिकतम प्रयोग किया जाने लगा है। ☆ इस विधि का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के किसी विशिष्ट व्यवहार के कारण की खोज करना है।
4.	मनोविश्लेषणात्मक विधि (Psycho-Analytic Method)	सिगमण्ड फ्रायड (ऑस्ट्रिया)	☆ इस विधि में व्यक्ति के "अचेतन मन" का अध्ययन किया जाता है।
5.	प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method)	बुडवर्थ (अमेरिका)	☆ इस विधि का उपयोग एक ही समस्या सम्बन्ध में विभिन्न व्यक्तियों के विचार जानने के लिए किया जाता है।
6.	रेटिंग स्केल विधि	सर्वप्रथम प्रयोग इण्डियाना की न्यू होम कॉलोनी में किया गया।	☆ इस विधि में व्यक्ति के व्यवहार एवं विशिष्ट गुणों का मूल्यांकन उसके संपर्क में आने वाले व्यक्तियों से उनके विचार लेकर किया जाता है।
7.	समाजमिति विधि (Sociometric Method)	जे.एल. मोरेनो (निवास-अमेरिका)	☆ यह एक नवीन विधि है जिसका प्रयोग समाज मनोविज्ञान में किया जाता है।
8.	प्रयोगात्मक (परीक्षण) विधि (Experimental Method)	विलियम वुण्ट (जर्मन)	☆ इस विधि में चरों या घटनाओं के मध्य संबंधों का पता लगाया जाता है।

अधिगम के सिद्धांत

क्र.	सिद्धांत	प्रवर्तक	प्रयोग	शिक्षा में प्रयोग
1.	प्रयत्न एवं भूल द्वारा अधिगम (उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत, अधिगम का बंध सिद्धांत, S-R थ्योरी, आवृत्ती का सिद्धान्त)	एडवर्ड ली थॉर्नडाइक (अमेरिका)	बिल्ली	1. इसमें अभ्यास द्वारा सीखने पर बल दिया जाता है। 2. अभ्यास द्वारा व्यक्ति को किसी भी कार्य में निपुण बनाया जा सकता है। [RPSC-2007] 3. गणित तथा विज्ञान जैसे विषयों के लिए अधिक उपयोगी। 4. त्रुटियों का निराकरण।
2.	अनुकूलित अनुक्रिया प्राचीन अनुबंधन/ (संबद्ध प्रतिक्रिया सिद्धांत) (Conditioned Response Theory) (RPSC II G. विज्ञान)	ईवान पेट्रोविच (रूस)	कुत्ता	इस सिद्धान्त से सम्बद्ध प्रतिवर्त (सहज) विधि का जन्म हुआ। 1. आदत निर्माण- कृत्रिम उद्दीपक के द्वारा भी शास्त्रीय अनुबंधन का सिद्धांत संबद्ध प्रतिक्रिया धीरे-धीरे आदत बन जाती है। 2. भाषा का विकास- छोटे बालकों को वस्तुएँ दिखाकर शब्दों का ज्ञान करवाना। 3. मनोवृत्तियों का निर्माण। 4. बुरी आदतों को त्यागना 5. सुलेख व अक्षर विन्यास जैसे विषयों के शिक्षण में यह अधिक उपयोगी है।
3.	अंतर्दृष्टि द्वारा अधिगम/ गेस्टाल्ट सिद्धांत (सूझ का सिद्धांत) (Theory of Operant Conditioning)	कॉहिलर, कोफ्का, वर्दायीमर (जर्मनी)	वनमानुष सुल्तान (चिंपांजी)	1. स्वयं समस्या का हल प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना। 2. छोटे बालकों के समक्ष वस्तु प्रस्तुत करने पर वे आवश्यक संबंधों का प्रत्यक्षीकरण शीघ्र कर लेते हैं।
4.	क्रिया प्रसूत अनुबंधन का सिद्धांत (सक्रिय अनुबंधन सिद्धांत)/ नैमित्तिक अनुबंधन	ब्यूरहस फ्रेडरिक स्किनर (अमेरिका)	कबूतर, चूहा	1. किसी भी अच्छे कार्य के लिए सकारात्मक पुनर्बलन देकर उसे प्रोत्साहित करना चाहिए एवं किसी भी गलत कार्य के लिए ऋणात्मक पुनर्बलन देकर उसे घटाना चाहिए।
5.	प्रबलन का सिद्धांत (न्यूनतम आवश्यकता का सिद्धांत) (विधिक सिद्धांत)	सी. एल. हल	चूहा	1. व्यक्तिगत शिक्षा पर बल दिया गया है। 2. शिक्षक को विषय वस्तु तथा अधिगम को दोहराने पर बल देना चाहिए ताकि बालक की आदत को बेहतर बनाया जा सके।

6.	अनुकरण द्वारा अधिगम	हेगरटी	-	-
7.	अधिगम का प्राकृतिक दशा सिद्धांत (क्षेत्र सिद्धांत) (तलरूपसिद्धान्त)	कुर्ट लेविन (जर्मनी)	-	1. इसमें व्यवहार पर जोर देते हुए अभिप्रेरणा का प्रयोग किया गया है। 2. शिक्षकों को छात्रों की योग्यता एवं शक्ति के अनुसार उपयुक्त मनोवैज्ञानिक वातावरण उपलब्ध करवाकर प्राप्त उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से निर्देशित करना चाहिए।
8.	स्थानापन्न/ प्रतिस्थापन/ समीनता का सिद्धांत	एडविन गूथरी	-	1. शिक्षक को उत्तेजना एवं अनुक्रिया के मध्य अधिकतम साहचर्य स्थापित कर अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाना चाहिए।
9.	अव्यक्त अधिगम/ चिन्ह आकार/ चिन्ह पूर्णाकारवाद सम्भावना सिद्धान्त/ प्रतीक अधिगम/ अप्रकट अधिगम	एडवर्ड टोलमेन	चूहा	1. अध्यापक द्वारा इनाम एवं दंड को उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग करना चाहिए। 2. सीखना ज्ञानात्मक मानचित्र बनाना है।
10.	अन्वेषण का सिद्धांत	जेरोम एस. ब्रुनर	-	1. अध्यापक को बच्चों में अधिगम के प्रति रुझान पैदा करना चाहिए। 2. विषय वस्तु को प्रभावी क्रमबद्धता के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।
11.	शाब्दिक अधिगम का सिद्धांत (प्राप्त अधिगम का सिद्धांत)	आसुबेल	-	1. विषय वस्तु को विद्यालयी परिस्थितियों में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। 2. यह महाविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त है।
12.	अधिगम सोपानिकी सिद्धांत	रॉबर्ट गेने	-	☑ अधिगम प्रभाव संचयी होता है। ☑ अधिगम की क्षमताओं के आठ प्रतिमान हैं- 1. संकेत अधिगम, 2. उद्दीपक-अनुक्रिया अधिगम, 3. गत्यात्मक शृंखलन, 4. शाब्दिक शृंखलन, 5. अपवर्त्य विभेदन, 6. सम्प्रत्यय अधिगम, 7. अधिनियम अधिगम, 8. समस्या समाधान ☑ अधिगम का हर प्रकार उत्तरोत्तर सरलतम (संकेत अधिगम) से जटिलतम अधिगम (समस्या समाधान) तक सोपानवत् जुड़ा है।
13.	सामाजिक अधिगम सिद्धांत/ प्रेक्षणात्मक अधिगम	अल्बर्ट बन्दुरा	-	☑ इस अधिगम में व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों का प्रेक्षण करता है और उनकी तरह व्यवहार करने लगता है। उदाहरण- फैशन शो तथा विज्ञापनों को देखकर अनुकरण करना।

बाल विकास एक नजर में

शैशवावस्था (जन्म से 5 वर्ष)

1. सीखने का आदर्श काल।
2. भावी जीवन की आधारशिला।
3. जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल
4. अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था।
5. तीव्रता से शारीरिक विकास की अवस्था।
6. क्षणिक संवेग की अवस्था
7. समुचित सांवेगिक विकास की दृष्टि से स्वर्णिम काल।

बाल्यावस्था (6-12 वर्ष)

1. स्थूल संक्रियात्मक अवस्था
2. अनोखा काल
3. निर्माण काल (भावी जीवन की सफलता एवं असफलता की नींव का काल)
4. प्रारंभिक विद्यालय की आयु।
5. वैचारिक क्रिया अवस्था।
6. टोली, दल, समूह की आयु
7. मिथ्या परिपक्वता का काल
8. खेल की आयु
9. प्रतिद्वंद्वतात्मक सामाजीकरण का काल
10. मूर्त चिन्तन की अवस्था। (RTET-2011)
11. कल्पना शक्ति एवं अमूर्त चिन्तन के प्रारंभ का काल।
12. बाल्यावस्था तीव्र शारीरिक क्रियाशीलता अभिवृद्धि का काल है।
13. बाल्यावस्था में सामाजिकता विकसित होती है
14. नये कौशलों एवं क्षमताओं के विकास की वृद्धि में स्वर्णिम काल है।

किशोरावस्था (13 - 18वर्ष)

1. अमूर्त चिन्तन की अवस्था।
2. दल भक्ति की अवस्था।
3. जीवन की सबसे कठिन काल
4. अटपटी व उलझन की अवस्था
5. समस्याओं की अवस्था।
6. द्रुत एवं तीव्र विकास की अवस्था।
7. स्वर्ण काल (अंतिम अवस्था जो बालक को परिपक्वता की ओर ले जाता है।)
8. बसन्त ऋतु
9. सामाजिक स्वीकृति की अवस्था।
10. व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ मित्रता की अवस्था
11. प्रबल दबाव व तनाव की अवस्था
12. संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था
13. आत्म-सम्मान व आत्म-स्वीकृति की अवस्था
14. तार्किक चिन्तन की अवस्था
15. संघर्ष और तूफान की अवस्था।
16. उथल-पुथल की अवस्था
17. संक्रमण काल की अवस्था/संक्रान्ति काल
18. टीन एज (Thirteen तथा Eighteen के मध्य की अवस्था होने के कारण)
19. सुनहरी अवस्था (सभी अवस्थाओं से अधिक आनन्दमयी एवं उपलब्धियों को अर्जित करने वाली अवस्था।)
20. ऐज ऑफ ब्यूटी

बाल विकास की अवस्थाएँ एवं प्रकार

कालसैनिक के अनुसार विकास के चरण-

(अ) गर्भाधान से जन्म समय तक	- गर्भावस्था
(ब) शैशव	(जन्म से तीन सप्ताह तक)।
(स) प्रारंभिक शैशव	(1 माह से 15 माह तक)।
(द) उत्तर शैशव	(15 माह से 30 माह तक)।
(य) पूर्व बाल्यकाल	(2.5 वर्ष से 5 वर्ष तक)।
(र) मध्य बाल्यकाल	(5 वर्ष से 9 वर्ष तक)।
(ल) उत्तर बाल्यकाल	(9 वर्ष से 12 वर्ष तक)।
(व) किशोरावस्था	(12 से 21 वर्ष तक)।

बाल विकास : अवस्थाएँ

पठार या विश्रामावस्था	जन्म के 10 दिन से 14 दिन तक
संवेदना एवं ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सीखने की अवस्था	जन्म से 2 वर्ष
स्वार्थी व स्वकेन्द्रित	जन्म से 2 वर्ष
संवेदी - पेशीय अवस्था	जन्म से 2 वर्ष
खिलौनों की आयु (RTET-2011)	2.5 से 5 वर्ष (पूर्व बाल्यावस्था)
प्रतिकारात्मक विचारों की तैयारी अवस्था	2 से 7 वर्ष
विवेचना रहित विचार अवस्था	2 से 7 वर्ष
अतार्किक चिन्तन की अवस्था	2 से 7 वर्ष
पूर्व सक्रियात्मक अवस्था	2 से 7 वर्ष
अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था	2 से 7 वर्ष
नकारात्मक अवस्था	11 से 13 वर्ष
वय संधि (ऑवरलेपींग काल)	11-12 से 13-16 वर्ष तक

व्यक्तित्व के प्रकार

गालेन का वर्गीकरण

क्र.सं.	द्रव्य	स्वभाव	व्यक्तित्व
1.	रक्त	प्रसन्नचित	क्रियाशील, आशावादी
2.	पीलापित्त	क्रोधी	शीघ्र उत्तेजित होने वाले
3.	कफ	आलसी	सुस्त
4.	कालापित्त	विवादग्रस्त	निराशावादी

क्रेश्मर का वर्गीकरण (Krestchemer's Classification)

शरीर रचना की दृष्टि से क्रेश्मर ने व्यक्तियों को तीन वर्गों में विभाजित किया है-

क्र.सं.	व्यक्तित्व	विशेष
1.	लंबकाय	ऐसे व्यक्ति लंबे एवं दुबले पतले शरीर वाले होते हैं। प्रायः ये दूसरों से घनिष्ठ संबंध बनाने से बचते हैं तथा अपने क्रोध को सीधे-सीधे व्यक्त नहीं कर पाते।
2.	सुडौलकाय	ऐसे व्यक्ति हट-पुष्ट शरीर वाले होते हैं।
3.	गोलकाय	ऐसे व्यक्ति छोटे कद के तथा मोटे होते हैं। ये प्रसन्नता एवं दुःख, सक्रिय एवं निष्क्रिय, उत्साह एवं निरुत्साह के बीच झूलते रहते हैं।

शैल्डन ने शरीर रचना को आधार बनाकर इस प्रकार के व्यक्ति बताये हैं-

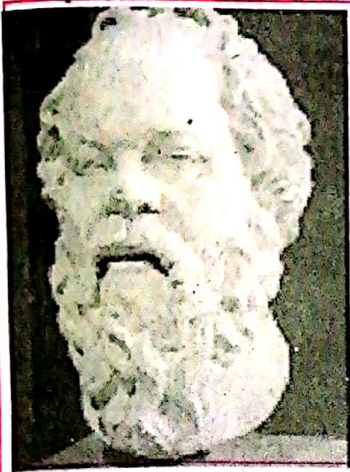
शैल्डन का शरीर के प्रकार का वर्गीकरण

क्र.सं.	शरीर का प्रकार	व्यक्ति का प्रकार	विशेष लक्षण
1.	गोलाकार	अंतरांग प्रधानता	भोजन के शौकीन, ज्यादा खाने की प्रवृत्ति, असुरक्षित, अच्छी तरह सोने वाले, प्यार के भूखे दूसरों पर आश्रित रहने वाले।
2.	सुडौलकाय	शरीरानुरूपता	साहसी, कठोर व्यायाम एवं ठंडा फुहारा स्नान पसंद करते हैं, औपचारिक वेपभूषा पहनते हैं, आसानी से एवं स्वेच्छा से दर्द का सामना करते हैं।
3.	लंबकाय	मनस्वी	असामाजिक, अप्रिय, व्यायाम की इच्छा का अभाव, डरपोक, आसानी से दर्द का सामना नहीं करते।

व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

विधि	प्रवर्तक	विशेष
प्रश्नावली विधि (कागज-पेंसिल परीक्षण)	बुडवर्थ	प्रश्नों की एक लम्बी श्रृंखला होती है बन्द प्रश्नावली उत्तर हाँ या नहीं में दिया जाता है। खुली प्रश्नावली प्रश्न का उत्तर अपने शब्दों में देने के लिए व्यक्ति स्वतंत्र होता है।
समाज मिति विधि	जे.एल.मोरेनो (अमेरिका)	सामाजिक गुणों का मापन
रोशा की स्याही- धब्बा विधि (इंक ब्लॉट टेस्ट)	हरमन रोशा (स्विट्जरलैण्ड)	10 कार्डों का प्रयोग जिन में पाँच काले, 2 काले व लाल तथा तीन अन्य रंगों के होते हैं। व्यक्ति के भावात्मक, संज्ञानात्मक पक्षों का अध्ययन
प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण, कक्षा प्रसंग परीक्षण(TAT)	मुरे तथा मॉर्गन (अमेरिका)	30 चित्र प्रयोग किए जाते हैं।
बालक अन्तर्बोध परीक्षण(CAT)	ल्योपोल्ड बैलक	10 चित्रों का प्रयोग होता है। तीन से ग्यारह वर्ष की आयु के बालकों के लिए उचित है।
वाक्य पूर्ति परीक्षण	पाइन तथा टेण्डलर	वाक्यों को पूर्ण किया जाता है।
स्वतंत्र शब्द साहचर्य परीक्षण	फ्रांसीस गाल्टन	व्यक्ति की आंतरिक मनोदशा का पता लगाने के लिए 50-100 उद्दीपक शब्दों को बोला जाता है।
स्वप्न विश्लेषण	फ्रॉयड	प्रयोज्य के सपनों का विश्लेषण करके व्यक्तित्व का पता लगाया जाता है
साक्षात्कार विधि		व्यक्तित्व परीक्षण की सर्वाधिक मान्य एवं सर्वाधिक प्रयुक्त विधि व्यक्तित्व मापन की इस मौखिक विधि का प्रयोग नौकरियों में भर्ती हेतु किया जाता है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक



सुकरात

सुकरात (यूनान)

- ★ सुकरात एक महान विचारक एवं दार्शनिक था।
- ★ सुकरात कहता था- 'ज्ञान ही सद्गुण है'
- ★ सुकरात की अध्ययन पद्धति को द्वन्द्वात्मक पद्धति कहा जाता है।

क्लार्क हल

- ★ हल ने प्रणाली बद्ध व्यवहार सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जो कि थार्नडाइक के 'प्रभाव का नियम' और पावलोव के 'शास्त्रीय अनुबन्धन' का मिश्रण है।
- ★ उन्होंने (S-O-R) उद्दीपन-प्राणी-अनुक्रिया का सूत्र प्रस्तुत किया।



क्लार्क हल

वुण्ट

- ★ जर्मनी के मनोवैज्ञानिक वुण्ट ने 1879 में लिपजिंग में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना की।
- ★ मनोविज्ञान को 'चेतना के विज्ञान' के रूप में परिभाषित किया।
- ★ वुण्ट को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है।



वुण्ट

रोशा

- ★ स्वीस मनोचिकित्सक 'हरमन रोशा' ने स्याही के धब्बों वाला परीक्षण (प्रक्षेपण विधि) का निर्माण 1921 में किया।
- ★ परीक्षार्थी को दस स्याही के धब्बों पर प्रतिक्रिया करनी होती है।
- ★ 10 कार्डों में पाँच काले, दो लाल व काले तथा तीन विभिन्न रंगों के होते हैं।



रोशा

कुर्त कोफ्का (जर्मनी)

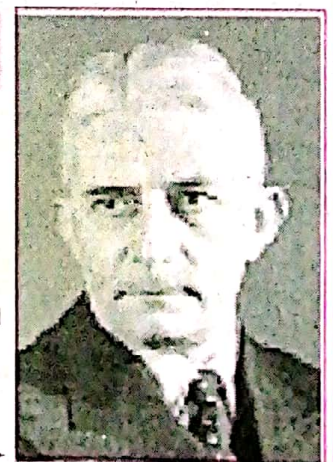
- ★ सन् 1912 में जर्मनी में वर्दिमियर व कोहलर के साथ मिलकर गैस्टाल्ट मत का प्रतिपादन किया।



कोफ्का

बोल्फ गैंग कोहलर (जर्मनी)

- ★ जर्मनी के माक्स वर्दिमियर, कोफ्का और कोहलर ने 'सूझ या अन्तरदृष्टि का सिद्धान्त' या 'गैस्टाल्ट सिद्धान्त' प्रतिपादित किया।
- ★ गैस्टाल्ट शब्द जर्मन है जिसका अर्थ है- समग्र आकृति।
- ★ इस सिद्धान्त के अन्तर्गत सुल्तान नामक वन मानुष पर प्रयोग किये गये।



कोहलर



टरमन

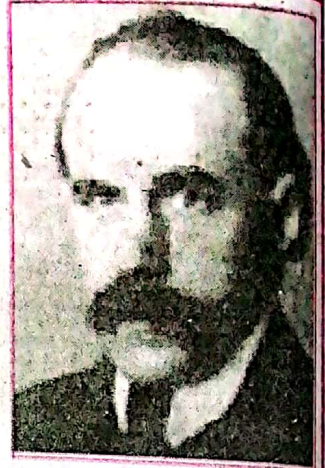
टरमन (USA)

- ★ बुद्धिलब्धि के सम्बन्ध में सबसे पहले टरमन ने विचार किया। उन्होंने बुद्धिलब्धि के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूत्र दिया।

$$\text{बुद्धिलब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

मैक्स वर्दिमियर (जर्मनी)

- ★ गैस्टाल्ट सम्प्रदाय के प्रतिपादन में कोफ्का, कोहलर के साथ मिलकर काम किया।



वर्दिमियर

मैसलो

- ★ इनके अनुसार प्रेरक दो प्रकार के होते हैं-

(1) जन्मजात प्रेरक (जैविक या शारीरिक प्रेरक)- भूख, प्यास, निद्रा, काम आदि। इन्हें प्राथमिक प्रेरक भी कहते हैं।



मैसलो

(2) अर्जित प्रेरक- ये अर्जित किए जाते हैं। जैसे- व्यक्तिगत रुचि, आदत की विवशता, जीवन का लक्ष्य, सामूहिकता की भावना आदि।



मेकडूगल

मेकडूगल (ब्रिटेन)

- ★ मनोविज्ञान जीवित वस्तुओं के व्यवहार का विधायक विज्ञान है। - मेकडूगल
- ★ मेकडूगल को मन ऊर्जा मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है।
- ★ मेकडूगल का महत्वपूर्ण योगदान मूलप्रवृत्ति का सिद्धान्त रहा है।

मूलप्रवृत्ति एक ऐसी जन्मजात मनोदैहिक प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को उद्दीपकों या वस्तुओं का विशेष ढंग से प्रत्यक्षण करके उसी मांग के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है।



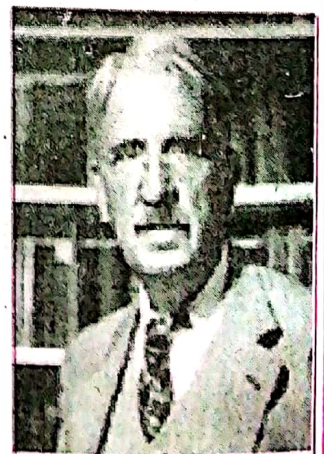
प्लेटो

प्लेटो

- ★ प्लेटो की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सत्य का साक्षात्कार है।
- ★ शिक्षा प्रणाली में अनुकरण को विशेष महत्व दिया।

जॉन ड्यूवी (USA)

- ★ जॉन ड्यूवी (USA) को जनतन्त्रीय शिक्षा का सबसे बड़ा व्याख्याता माना जाता है।
- ★ करके सीखने के सिद्धान्त के पक्षधर थे।
- ★ जॉन ड्यूवी प्रयोजनावाद का समर्थक था।



जॉन ड्यूवी



मेरिया मॉन्टेसरी

मेरिया मॉन्टेसरी (इटली)

- ★ डॉ. मेरिया मॉन्टेसरी (इटली) इन्द्रियों के माध्यम से प्रशिक्षण देने वाली मॉन्टेसरी शिक्षण प्रणाली के लिए जानी जाती हैं।

सिगमेंड फ्रायड (आस्ट्रिया)

(मनोविश्लेषणवादी)

- ★ मानव व्यवहार की मूल प्रेरणा काम है। काम या लिबिडो शक्तियों का वह भण्डार है, जो सदैव सुखों की खोज करता है।
- ★ एक सामान्य व्यक्ति का व्यक्तित्व तीन कारक इड, इगो तथा सुपर इगो से बनता है।



सिगमेंड फ्रायड

किलपेट्रीक

- ★ हेनरी किलपेट्रीक 'योजना विधि' के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- ★ उनके अनुसार शिक्षा में अनुभवों द्वारा सीखने को प्रधानता दी जानी चाहिए।



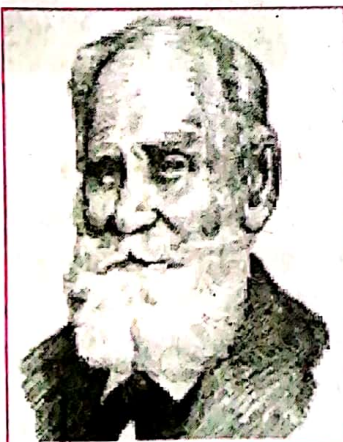
किलपेट्रीक



एलेक्स फैकने

एलेक्स फैकने
ऑसब्रोन (USA)

रचनात्मक तकनीकी
ब्रेन स्टोर्म तकनीक के
प्रणेता



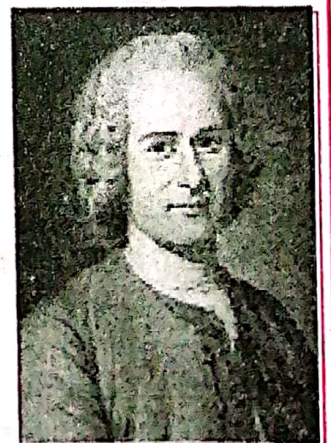
पावलाँव

ईवान पेट्रोविच
पावलाँव (रूस)

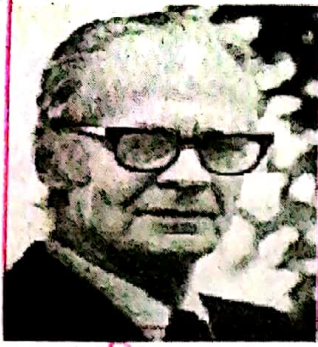
- ★ रूसी शरीर शास्त्री पावलाँव ने कुत्ते पर प्रयोग कर 'शास्त्रीय अनुबन्धन का सिद्धान्त' (Classical Conditioning Theory) प्रतिपादित किया।

रूसो

- ★ शिक्षा में मनोवैज्ञानिक आन्दोलन का सूत्रपात करने का श्रेय रूसो को है।
- ★ उन्होंने अपनी पुस्तक एमिली में एक काल्पनिक बालक की शिक्षा का वर्णन किया है।



रूसो



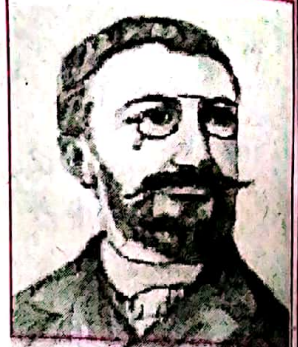
स्किनर

चार्ल्स ई. स्किनर

- ★ शिक्षा मनोविज्ञान को शिक्षक निर्माण की आधारशिला माना है।
- ★ स्किनर ने चूहा व कबूतर पर प्रयोग कर क्रिया प्रसूत अनुबन्धन का सिद्धान्त दिया।

अल्फ्रेड विने

- ★ बुद्धि मापन का कार्य सर्वप्रथम विने द्वारा प्रारम्भ किया।
- ★ विने ने सर्वप्रथम 1905 में प्रथम बुद्धि परीक्षण तैयार किया।
- ★ विने तथा साइमन ने मनोविज्ञान साहित्य में 'मानसिक आयु' शब्द का पहली बार प्रयोग किया।



अल्फ्रेड विने

- ★ बुद्धिलब्धि के विचार का जनक कहा जाता है।

फ्रोबेल

- ★ जर्मन शिक्षाशास्त्री फ्रोबेल 'किंडर गार्टन शिक्षा प्रणाली' को प्रारंभ करने वाले के रूप में जाने जाते हैं।
(RPSC II G. English)
- ★ इन्होंने खेल द्वारा शिक्षा एवं स्वतः क्रिया द्वारा शिक्षा के सिद्धान्त पर बल दिया।



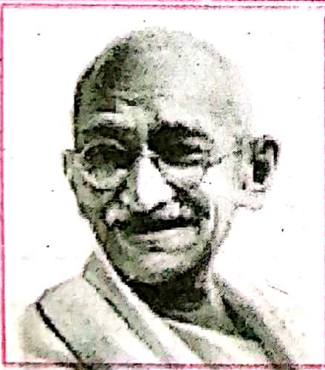
फ्रोबेल



कार्ल जुंग

कार्ल जुंग

- ★ जुंग ने व्यक्तित्व के दो प्रकार बताये हैं-
(1) अन्तर्मुखी- व्यक्तित्व लक्षण, स्वभाव, आदतें बाह्य रूप से प्रकट नहीं होते हैं।
(2) बहिर्मुखी- व्यक्तित्व लक्षण, स्वभाव बाह्य रूप से प्रकट होते हैं। जैसे- सामाजिक, राजनैतिक नेता आदि।



महात्मा गांधी

महात्मा गांधी

- ★ बेसिक शिक्षा पर जोर (मातृभाषा के माध्यम से)
- ★ शिक्षा का अर्थ में बालक अथवा मनुष्य में आत्मा, शरीर और बुद्धि के सर्वांगीण और सबसे अच्छे विकास से समझता हूँ।

जीन पियाजे

- ★ पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार सीखना उस समय अर्थपूर्ण होता है जबकि विद्यार्थी की रुचि और कौतूहल के अनुरूप होता है।



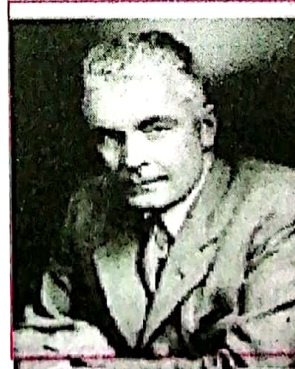
जान पियाज

एडवर्ड ली थार्नडाइक (USA)

- ★ थार्नडाइक को 'पशु मनोविज्ञान' का पितामह कहा जाता है।
- ★ थार्नडाइक ने भूखी विल्ली पर प्रयोग कर सीखने के क्षेत्र में 'प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त' को प्रतिपादित किया।
- ★ थार्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक माना जाता है।



थार्नडाइक



वाट्सन

वाट्सन (USA)

- ★ वाट्सन को व्यवहारवाद का पिता कहा जाता है। वाट्सन ने मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा है।
- ★ 'तुम मुझे कोई भी बालक दो और मैं उसे कुछ भी बना सकता हूँ।' - वाट्सन।
- ★ पुस्तक-बिहेवियर एन इन्ट्रडक्शनल टू कम्परेटिव साइकोलॉजी, द साइकोलॉजिकल केयर ऑफ दी इन्फेन्ट एंड चाइल्ड

Daily Current Affairs PDF, Best Test Series, Best GK PDF के लिए हमें Follow करें



GK Trick By Nitin Gupta
The Ultimate Key to Success.

Welcome To

GK TRICK BY NITIN GUPTA APP

यहाँ पर आपको मिलेगा

- ✓ Best PDF Notes For All Exams
- ✓ Best Test Series For All Exams
- ✓ Daily Current Affairs PDF
- ✓ सभी Course बहुत ही कम Price पर
- ✓ सभी Test Detail Discription के साथ व Analysis करने को सुविधा

